शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

आचार्य-कुल

विनोबा

आचार्यकुल, आचार्य विनोबाजी की प्रेरणा से स्थापित निर्भय, निर्वैर, निष्पक्ष आचार्यों का राष्ट्रीय संगठन तथा भाईचारा है। इसमें लोकशिक्षण से संबंधित अध्यापक, साहित्यकार, पत्रकार, वकील, चिकित्सक, वयस्क छात्र आदि भाई-बहनों का समावेश होता है, जो आचार्य-कुल के उद्देश्यों को स्वीकार करते हैं और अपनी सार्थकता लोकसेवा तथा लोकशिक्षण में ही मानते हैं, राज्यसत्ता और उसकी आकांक्षाओं में नहीं। वे मानते हैं कि देश का सर्वांगीण विकास तथा समाज का नव-निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा पूर्णतया स्वायत्त और स्वतंत्र हो। इसके लिए आचार्य शक्ति विकसित करना जरूरी है। आचार्य-कुल से अपेक्षा है कि वह समाज के लिए नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति का केंद्र हो। नैतिक और आध्यात्मिक आधार के बिना हमारा समाज-जीवन या राष्ट्र-जीवन अथवा मानव जाति का आज कोई भी व्यापार-व्यवहार शांति से सुव्यवस्थित चल ही नहीं सकता। उस नैतिक-शक्ति की प्रस्थापना से ही हम अपनी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं का समाधान कर पायेंगे। आचार्य-कुल जाति, वंश, धर्म, पंथ, भाषा, पक्ष, प्रांत आदि भेदों से मुक्त व्यापक हृदय रखने वाले सज्जनों का और विद्वतजनों का व्यासपीठ है, जहां राष्ट्रीय, जागतिक और मानव कल्याण का ही हितचिंतन होता है। आचार्य एकत्र होकर राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं पर सहचिंतन कर, अपनी राय समाज के सामने प्रस्तुत करते हैं, समाज का मार्गदर्शन करते हैं और लोकशक्ति को सजग बनाते हैं। यह स्पष्ट है कि लोकशक्ति अहिंसा के आधार पर ही खड़ी की जा सकती है। विनोबाजी ने उसे 'तीसरी शक्ति' कहा है; जो हिंसा-शक्ति की विरोधी और दण्ड-शक्ति से भिन्न है। उसका विकास तभी किया जा सकता है जब लोकशिक्षण के द्वारा समाज के विचार में परिवर्तन लाया जाये और लोगों की आंतरिक शक्ति और आत्मविश्वास को जगाया जाये। इसकी जिम्मेदारी आचार्यों पर, विद्वतजनों पर, सज्जनों पर स्वाभाविक रूप से आती है। क्योंकि वे ही सच्चे अर्थ में समाज का कान्शस या अंतर-भावना एवं विवेक बन सकते हैं। "बाबा (विनोबा) के जीवन में जो चार-पांच चीजें बनी हैं, उन में आचार्य-कुल आखिरी है। आचार्य-कुल यानी आध्यात्मिक दृष्टि से लोक-नीति के आधार पर संगठन। राजनैतिक पुरुषों का चिंतन पूर्वाग्रह-मुक्त नहीं होता। इसलिए वह चिंतन सम्यक् नहीं होता। ऐसी हालत में उनके मार्गदर्शन में लोक जायेंगे तो उनकी अत्यंत दुर्दशा होगी। आचार्य-कुल जो सर्व-सम्मत निर्णय देगा, वह देश को अत्यंत उपयोगी होगा। तटस्थ विद्वानों का योग्य शब्दों में किया विचार मिलेगा तो देश बचेगा। शंकराचार्य ने लिखा है **परतंत्र-प्रज्ञास्तु प्रायेण जानाः** सामान्यजन जो होते हैं, वे स्वतंत्रता से कोई विचार ग्रहण नहीं कर सकते हैं। इसलिए उनके सामने आचार्यों का सर्व-सम्मति से योग्य शब्दों में किया विचार रखेंगे तो ठीक मार्गदर्शन मिलेगा।" **17-9-1971**